विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

मित्र घटने तथा अकेलापन बढ़ने के सामाजिक संकेत

हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू के एक हालिया लेख में कहा गया है कि दुनिया भर में लोगों के बीच आपसी दोस्ती में तेज़ी से गिरावट आ रही है। यह लेख कहता है कि 1990 से अब तक, अमेरिका में ऐसे लोगों की संख्या, जो कहते हैं कि "मेरा कोई करीबी दोस्त नहीं है," चार गुना बढ़कर 12 प्रतिशत हो गई है। वहीं दूसरी ओर, जिन लोगों के 10 या उससे ज़्यादा जिगरी दोस्त हैं, उनकी संख्या में एक-तिहाई की कमी आई है। भारत के शहरी इलाकों में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिल रही है – जान-पहचान वाले लोग तो बढ़ रहे हैं, लेकिन सच्ची दोस्ती कम हो रही है। पहले लोग कार्यक्रमों में, कॉफी हाउसों में, कैफ़ों में या क्लबों में अजनबियों से मजे से बातचीत करते हुए दोस्त बन जाया करते थे। अब तो भीड़ के बीच भी लोग अकेले ही रहते हैं। अमेरिका में, पिछले दो सालों में अकेले भोजन करने वाले लोगों की संख्या में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। ऐसे हालात में स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी ने तो दोस्ती पर एक कोर्स भी शुरू किया है। यह सिर्फ़ एक सामाजिक मुद्दा नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक समस्या है। दोस्तों के लिए समय निकालना अब समस्या बन गया है। अकेलापन अब एक लत बनता जा रहा है। यह चिंता व्यक्त की जा रही है कि यदि हम दोस्ती को अहमियत नहीं देंगे, तो हम न सिर्फ़ नए दोस्त खो देंगे, बल्कि अपने पुराने रिश्ते भी गंवा बैठेंगे। अनुसंधानों से पता चलता है कि अकेलापन दिल की बीमारियों, डिमेंशिया और समय से पहले मौत का खतरा बढ़ा देता है। चिकित्सक कहते हैं कि यह उतना ही नुकसानदायक है, जितना कि दिन में 15 सिगरेट पीना। मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक सेहत के लिए दोस्त बेहद ज़रूरी है। हार्वर्ड के 80 साल के एक अध्ययन के अनुसार, सच्ची खुशी और अच्छी सेहत का राज करीबी रिश्तों में छिपा होता है। पैसा तो कमाया जा सकता है, रुतबा भी बदल सकता है, लेकिन सच्चा दोस्त नहीं बदलता है, वह हर मुश्किल घड़ी में साथ खड़ा मिलता है। इसलिए, कहा जाता है कि अच्छे दोस्त ही असली दौलत होते हैं। दोस्ती को सींचना पड़ता है, उसके लिए समय निकालना पड़ता है, एक-दूसरे को माफ़ करना पड़ता है। सच्चे दोस्तों के साथ ही ज़िंदगी खूबसूरत बनती है। किन्तु गिग इकॉनमी के उभार और आर्थिक दबावों ने खाली समय को एक विलासिता बना दिया है। दोस्तों के लिए समय निकालने की प्राथमिकता कम होती जा रही है। हम अपना समय कैसे बिताते हैं, किस पर अपना समय लगाते हैं, और किसे प्राथमिकता देते हैं, ये सब बदल रहा है। अकेलापन अब सिर्फ़ एक पसंद नहीं रह गया है–यह एक डिफ़ॉल्ट स्थिति जैसा बनता जा रहा है। जब इसका सही इस्तेमाल नहीं होता, तो अकेलेपन का नतीजा सिर्फ़ कम दोस्त होना ही नहीं होता, बल्कि यह दोस्ती बनाने और उसे बनाए रखने की बुनियादी क्षमता का ही खत्म हो जाना होता है। ये रुझान एक गंभीर सांस्कृतिक संकट की ओर इशारा करते हैं। समाजशास्त्री चेताते हैं कि यदि हम अपनी प्राथमिकताओं को फिर से नहीं बनायेंगे और सार्थक रिश्ते बनाना फिर से नहीं सीखेंगे, तो हम एक ऐसे भविष्य के जोखिम में पड़ जाएंगे जहां खुशी और भलाई के सबसे बुनियादी स्त्रोतों में से एक मानवीय जुड़ाव जीवन की पृष्ठभूमि में कहीं खो जाएगा। इसलिये पहचान और सामाजिक जीवन को आकार देने में रिश्ते बनाये रखने की भूमिका को समझना होगा क्योंकि ये बदलाव यह भी संकेत दे रहे हैं कि शायद एक गहरा सांस्कृतिक परिवर्तन घटित हो रहा है।

हालांकि अपने काम में सार्थकता ढूंढना अपने आप में कोई समस्या नहीं है। लेकिन जब काम में संतुष्टि पाने की क़ीमत सार्थक निजी रिश्तों से चुकाना पड़े, तो यह एक समस्या बन जाती है–एक ऐसी समस्या जिसमें यह जोखिम होता है कि व्यक्ति अपने करियर में तो संतुष्ट रहे, लेकिन अपनी निजी ज़िंदगी में अकेला पड़ जाए। अब ज़्यादा ज़ोर एकल परिवार पर नज़र आ रहा है। ये रुझान बताते हैं कि लोग सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेने के बजाय, ज़्यादा से ज़्यादा अपनी ही दुनिया में सिमटते जा रहे हैं। अब दोस्ती को रोज़मर्रा की ज़िंदगी का एक ज़रूरी हिस्सा नहीं माना जाता, बल्कि इसे ऐसी चीज़ समझा जाता है जिसके लिए हम तभी समय निकालते हैं, जब हमारी बाकी सभी ज़िम्मेदारियां पूरी हो चुकी होती हैं। स्क्रीन टाइम और सिर्फ़ डिजिटल माध्यम से बनी दोस्ती का चलन जरूर बढ़ रहा है। इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन के आने से यह बदलाव तेजी से आया है। किशोरों में तो यह चलन और भी स्पष्ट तौर पर दिखता है। पश्चिम के अध्ययन बताते हैं कि किशोरवय के बच्चे स्कूल के समय के अलावा दोस्तों के साथ आमने-सामने सिर्फ़ 40 मिनट बिताते हैं, जबकि लगभग दो दशक पहले यह समय 140 मिनट था। दूसरी ओर, आज के किशोर डिवाइस पर ज़्यादा से ज़्यादा समय बिता रहे हैं। जानकार बताते हैं कि 2021 में, एक औसत किशोर ने रोज़ाना स्क्रीन पर लगभग नौ घंटे बिताए, जो 2015 में दो घंटे से अधिक का नहीं था। अगर डिजिटल दोस्ती और आमने-सामने की दोस्ती एक जैसी होतीं, तो इस सांस्कृतिक बदलाव से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन ऑनलाइन दोस्ती के लिए आमने-सामने की दोस्ती से अलग तरह के सामाजिक व्यवहार की ज़रूरत होती है। ऑनलाइन दोस्ती बनाए रखने के लिए सही मैसेज लिखने, टेक्स्ट-आधारित बातचीत को समझने और एक ही समय में कई लोगों के साथ अलग-अलग समय पर बातचीत करने जैसे हुनर की ज़रूरत होती है। इसके उलट, आमने-सामने की दोस्ती में पूरा ध्यान देना ज़रूरी होता है, और यह अचानक बने पलों, बॉडी लैंग्वेज को समझने और आमने-सामने के जुड़ाव की कमज़ोरियों को संभालने से मज़बूत होती है। कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि जो युवा डिजिटल बातचीत में डूबे हुए बड़े हो रहे हैं, वे आमने-सामने के सामाजिक हुनर सीखने का मौका गंवा रहे हैं–वही हुनर जो कभी गहरे मानवीय जुड़ाव की पहचान हुआ करते थे। समाजशास्त्री इस बात की चिंता व्यक्त कर रहे हैं कि हम ऐसे लोगों की एक पीढ़ी तैयार कर रहे हैं जिन्हें दोस्त बनाने के मुश्किल काम को संभालने का न तो तरीका आता है और न शायद उनमें ऐसा करने की क्षमता भी है। अनुसंधान यह भी बताते हैं कि डिजिटल बातचीत से जुड़ाव ही कमज़ोर नहीं होते हैं, बल्कि मानसिक सेहत भी कमज़ोर होती है। कोई 50 साल से ज़्यादा उम्र के लगभग 13,000 वयस्कों पर हाल ही में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि जो लोग हफ़्ते में कम से कम एक बार आमने-सामने बातचीत करते थे, उनकी शारीरिक और मानसिक सेहत बेहतर थी; जबकि फ़ोन कॉल या मैसेज के ज़रिए बातचीत करने वालों पर ऐसा कोई असर नहीं दिखा। न्यूरोसाइंस हमें इन नतीजों को समझने में मदद करता है। चिकित्सकीय अनुसंधान बताते हैं कि किसी जानी-पहचानी आवाज़ को सुनने से शरीर में कोर्टिसोल का स्तर कम होता है और ऑक्सीटोसिन का स्तर बढ़ता है। ये दोनों हार्मोन तनाव कम करने और जुड़ाव बनाने से संबंधित हैं। दूसरी तरफ टेक्स्ट-आधारित बातचीत और वीडियो कॉल से वैसी ही प्रतिक्रिया नहीं मिलती। इन जैविक संकेतों के बिना, डिजिटल बातचीत अजीब तरह से खाली-खाली लग सकती है, जिससे अकेलापन दूर होने के बजाय और बढ़ जाता है। यह सांस्कृतिक बदलाव विशेष रूप से भ्रामक है, क्योंकि यह न केवल हमारी आदतों को बदल रहा है–बल्कि यह हमारे दिमाग की बनावट को भी बदल रहा है। दोस्त बनाने के लिए अपनी कमज़ोरियों को ज़ाहिर करना ज़रूरी होता है, लेकिन अकेलापन इस कमज़ोरी को सहना और भी मुश्किल बना देता है। एक शोध से पता चला है कि अकेलापन खुद को ही और बढ़ाता है। जब लोग खुद को अकेला महसूस करते हैं, तो वे सामाजिक खतरों के प्रति ज़्यादा संवेदनशील हो जाते हैं, और उनके किसी भी बातचीत को गलत तरीके से समझने की संभावना बढ़ जाती है। यानी, वे यह सोचने लगते हैं कि उन्हें ठुकराया जा रहा है।

अच्छे दोस्त ही असली दौलत होते हैं। दोस्ती को सींचना पड़ता है, उसके लिए समय निकालना पड़ता है, एक-दूसरे को माफ़ करना पड़ता है। सच्चे दोस्तों के साथ ही ज़िंदगी खूबसूरत बनती है। किन्तु गिग इकॉनमी के उभार और आर्थिक दबावों ने खाली समय को एक विलासिता बना दिया है।

अब असली दोस्तों की जगह लोग सोशल मीडिया पर फॉलोवर्स तथा फ्रेंड्स की संख्या बढ़ाने में लगे रहते हैं, लेकिन संकट के समय साथ खड़े होने वाले सच्चे दोस्त कम होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी पर दिखावे का दबाव भी जबरदस्त है। अब लोग मिलते हैं तब भी उनमें आपस में बातचीत से ज्यादा जरूरी चेक-इन करना और सेल्फी पोस्ट करना हो गया है। जब दो दोस्त आमने-सामने मिलते भी हैं, तब भी दोनों का ध्यान अपने-अपने फोन के नोटिफिकेशन पर रहता है। चैट और रील्स शेयर करने को ही लोग मिलना मान लेते हैं, जिससे असल जिंदगी में साथ बिताया जाने वाला समय घट गया है। सोशल मीडिया के इस युग में अपनी असली दोस्ती को जिंदा रखने और उसे मजबूत बनाने के लिए कुछ व्यावहारिक उपाय आजमाये जा सकते हैं। जैसे मिलने के दौरान फोन को बंद कर दिया जाना या उसे साइलेंट मोड पर कर देना। महीने में कोई एक दिन, जैसे हर महीने का दूसरा रविवार तय कर लेना, जब दोस्तों का मिलना अनिवार्य हो। मिलने का ऐसा बहाना किसी साझे शौक का हो सकता है, जैसे सिने संगीत। किसी को मिलने के लिए व्हाट्सएप मैसेज भेजने के बजाय सीधे फोन कॉल करना भी बेहतर हो सकता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि आवाज सुनकर मिलने की इच्छा ज्यादा मजबूत होती है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

आइए, जयपुर (गुलाबी नगर) को हम सुंदर बनाएं

प्रोफेसर अशोक कुमार

गुलाबी नगरी के रूप में विश्व विख्यात जयपुर केवल राजस्थान की राजधानी ही नहीं, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला, उत्कृष्ट नगर नियोजन और सांस्कृतिक चेतना का एक अद्वितीय वैश्विक प्रतीक है। सन् 1727 में महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय और प्रख्यात वास्तुविद् पं. विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा सुनियोजित ग्रिड पैटर्न (नवग्रह सिद्धांत) पर स्थापित इस ऐतिहासिक महानगर को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का गौरव प्राप्त है। 21वीं सदी के तीव्र शहरीकरण, बढ़ती जनसंख्या और भौतिक विस्तार के बीच जयपुर की ऐतिहासिक आत्मा, सांस्कृतिक वैभव और प्राकृतिक संतुलन को संवारते हुए इसे विश्वस्तरीय सौंदर्य प्रदान करना आज प्रत्येक नागरिक और नीति-निर्माता का परम पुनीत दायित्व है।

किसी भी ऐतिहासिक नगर का सौंदर्यीकरण मात्र बाह्य रंग-रोगन या सतही चमक-दमक तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह वहां के निवासियों के जीवन-स्तर, आर्थिक गतिशीलता, पर्यावरणीय सुरक्षा और सामाजिक चेतना का दर्पण होता है। जयपुर के सर्वांगीण विकास के लिए यह दृष्टिकोण निम्नलिखित मूलभूत आधारों पर टिका है:–

एक स्वच्छ, हरित और सुव्यवस्थित वातावरण नागरिकों के शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य को सीधे प्रभावित करता है। सुनियोजित पार्क, प्रदूषण-मुक्त स्वच्छ वायु और सुरक्षित पैदल मार्ग तनावमुक्त और स्वस्थ जीवनशैली की अनिवार्य आवश्यकता हैं। जयपुर राजस्थान की अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। शहर का उत्कृष्ट सौंदर्य, सुगम यातायात और स्वच्छता देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय हस्तशिल्प, रत्न-आभूषण, वस्त्र उद्योग, होटल और आतिथ्य सत्कार क्षेत्र में रोजगार के विपुल अवसर सृजित होते हैं।

किसी नगर की स्वच्छता और सुव्यवस्था वहां के निवासियों के नागरिक अनुशासन, प्रशासनिक सहयोग और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को दर्शाती है। कंक्रीट के अनियंत्रित प्रसार के बीच सघन हरियाली का विस्तार, भूजल संवर्धन और वैज्ञानिक कचरा प्रबंधन ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जयपुर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, प्रदूषण-मुक्त और जीवनक्षम महानगर बना रहे।

जयपुर की सुंदरता और स्थायित्व के लिए एक वैज्ञानिक और प्रभावी जल निकासी व्यवस्था सबसे पहली और अनिवार्य पूर्व-शर्त है। मानसून के दौरान होने वाले जलभराव की समस्या का स्थायी समाधान किए बिना शहर का कोई भी ढांचागत विकास या सौंदर्यीकरण क्षणभंगुर सिद्ध होगा। परकोटे की पारंपरिक बसावट और नए विस्तार क्षेत्रों के प्राकृतिक भौगोलिक ढलान के अनुरूप एक व्यापक और वैज्ञानिक ड्रेनेज मास्टर प्लान को सर्वोच्च प्राथमिकता पर लागू किया जाए।

स्टॉर्म वॉटर एवं सीवरेज नेटवर्क का पूर्ण पृथक्करण:– बरसात के पानी की निकासी और सीवरेज लाइनों को पूरी तरह अलग रखा जाए, ताकि अतिवृष्टि के समय सीवर चोक होकर दूषित पानी सड़कों और आवासीय क्षेत्रों में न फैले।

मानसून आगमन से कम से कम दो माह पूर्व शहर के सभी मुख्य प्राकृतिक नालों और आंतरिक ड्रेनेज चैनलों की गहरी सफाई की जाए तथा निकाले गए मलबे का तुरंत सुरक्षित निस्तारण सुनिश्चित हो। अरावली पर्वतमाला से आने वाले वर्षा जल के पारंपरिक बहाव मार्गों और कैचमेंट एरिया में हुए अवैध निर्माणों को कड़ाई से हटाकर प्राकृतिक प्रवाह को अवरोध-मुक्त बनाया जाए। नालियों में प्लास्टिक कचरा जाने से रोकने के लिए रणनीतिक बिंदुओं पर जालीदार ट्रैप/फिल्टर लगाए जाएं तथा निचले जलभराव वाले क्षेत्रों में स्वचालित उच्च क्षमता वाले पंपिंग स्टेशन स्थापित किए जाएं। द्रव्यवती नदी, मानसागर (जल महल), आमेर की मावठा झील और ऐतिहासिक बावड़ियों का कायाकल्प कर वर्षा जल संचयन को बढ़ावा दिया जाए।

जयपुर का चारदीवारी क्षेत्र (परकोटा) अपनी वास्तुशिल्पीय भव्यता, गुलाबी आभा, सुव्यवस्थित बाजारों और छतरियों के लिए जाना जाता है। इसके ऐतिहासिक स्वरूप को अक्षुण्ण रखने हेतु निम्नलिखित कदम अनिवार्य हैं:–यूनेस्को हेरिटेज बायलॉज के अंतर्गत पारंपरिक गेरुआ/गुलाबी रंग की प्राकृतिक डिस्टेंपर कोटिंग, झरोखों, कंगूरों और छतरियों का मूल स्थापत्य शैली में संरक्षण किया जाए तथा किसी भी विद्रूप निर्माण पर रोक लगे।

बाजारों (जौहरी बाजार, हवा महल बाजार, त्रिपोलिया, चांदपोल) में लटकते बिजली और टेलीकॉम तारों के जंजाल को पूरी तरह भूमिगत डक्ट्स में शिफ्ट किया जाए और बड़े भद्दे होर्डिंग्स हटाए जाएं। सभी दुकानों के साइनबोर्ड्स के लिए एक मानक आकार, एकरूप हेरिटेज फॉन्ट (देवनागरी व अंग्रेजी) तथा पीतल या काष्ठ की पारंपरिक पृष्ठभूमि निर्धारित की जाए। अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट और चांदपोल के बाहरी छोर पर बहुमंजिला पार्किंग विकसित की जाए। चारदीवारी के आंतरिक व्यस्ततम मार्गों पर पीक आवर्स में नो-व्हीकल जोन लागू कर केवल पैदल यात्रियों तथा पर्यावरण-अनुकूल विंटेज लुक वाले ई-कार्ट्स को अनुमति दी जाए। जीर्ण-शीर्ण निजी हवेलियों को सार्वजनिक-निजी सहभागिता के माध्यम से हेरिटेज होमस्टे, लिटरेचर कैफे, हस्तशिल्प दीर्घाओं और संस्कृति केंद्रों में बदला जाए ताकि उनकी वास्तुकला जीवंत बनी रहे। हवा महल, जंतर-मंतर, अल्बर्ट हॉल और ऐतिहासिक द्वारों पर ऊर्जा-दक्ष व सुरुचिपूर्ण वार्म-व्हाइट थीम लाइटिंग लगाई जाए, जो रात्रि में शहर के सौंदर्य को भव्यता प्रदान करे। विरासत के संरक्षण के साथ-साथ परकोटे से बाहर फैले नए जयपुर (मानसरोवर, वैशाली नगर, मालवीय नगर, जगतपुरा, विद्याधर नगर आदि) को एक आधुनिक, हरित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध उपनगर के रूप में संवारना अत्यंत आवश्यक है:जेएलएन मार्ग, टोंक रोड, अजमेर रोड और मेट्रो पिलर्स व फ्लाईओवर्स को केवल व्यावसायिक विज्ञापनों का केंद्र न बनाकर उन पर सांगानेरी ब्लॉक प्रिंट, मंडाना, फड पेंटिंग और आधुनिक 3 भित्ति चित्रों का उत्कृष्ट सृजन किया जाए।

प्रमुख गोल चक्करों पर कंक्रीट के बेतरतीब ढांचों के स्थान पर ढूंढाड़ी वास्तुकला से प्रेरित मूर्तियां, फव्वारे और देशी प्रजाति के छायादार वृक्षों से सुसज्जित लैंडस्केपिंग की जाए। सेंट्रल पार्क, स्मृति वन, झालाना वन क्षेत्र और आमागढ़ तलहटी को इको-टूरिज्म व जैव विविधता संरक्षण क्षेत्र के रूप में सहेजा जाए। जवाहर कला केंद्र और रवींद्र मंच की तर्ज पर जगतपुरा, विद्याधर नगर और मानसरोवर में खुले एम्फीथिएटर और कम्युनिटी आर्ट सेंटर स्थापित किए जाएं, जिससे कला, संगीत, नृत्य और नाट्यय गतिविधियां पूरे महानगर में सुलभ हो सकें। वहीं जयपुर के विश्वप्रसिद्ध मीनाकारी, कुंदन ज्वैलरी, ब्लू पॉटरी, संगमरमर मूर्तिशिल्प और लाख कला को बढ़ावा देने हेतु लाइव क्राफ्ट हब बनाए जाएं, जहां सैलानी कारीगरों को प्रत्यक्ष कार्य करते देख सकें।

स्वच्छता ही किसी भी सौंदर्य की वास्तविक आत्मा है। ठोस कचरा प्रबंधन को वैज्ञानिक और पारदर्शी बनाना शहर को शीर्ष राष्ट्रीय पायदान पर स्थापित करने के लिए आवश्यक है:–गीले, सूखे और खतरनाक कचरे का घरों और दुकानों के स्तर पर ही पृथक्करण सुनिश्चित किया जाए। खुले डंपिंग याड्र्स को समाप्त कर आधुनिक ट्रांसफर स्टेशनों का संचालन हो। परकोटा क्षेत्र, प्रमुख बाजारों और पर्यटन स्थलों पर रात्रि में मैकेनाइज्ड स्वीपिंग और वाटर वॉशिंग की नियमित व्यवस्था की जाए।

जयपुर का सौंदर्य केवल अतीत का गौरव गान करने में नहीं, बल्कि उस गौरव को आधुनिक आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य बिठाकर भविष्य के लिए संवारने में है। हेरिटेज बायलॉज का कठोरता से अनुपालन, डिजिटल मॉनिटरिंग, पारदर्शी प्रशासनिक तंत्र और सबसे बढ़कर-जयपुरवासियों की सक्रिय नागरिक सहभागिता (जन-भागीदारी)-ही इस गुलाबी नगर को 21वीं सदी का एक स्वच्छ, हरा-भरा, सुरुचिपूर्ण और विश्वस्तरीय आदर्श महानगर बना सकती है। आइए, हम सब मिलकर अपनी इस अमूल्य धरोहर को सुंदर, सुरक्षित और गौरवशाली बनाने का संकल्प लें।

–प्रोफेसर अशोक कुमार,
पूर्व कुलपतिः कानपुर विश्वविद्यालय एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय

'अधिक विश्वविद्यालय' से आगे बढ़कर 'बेहतर विश्वविद्यालय'

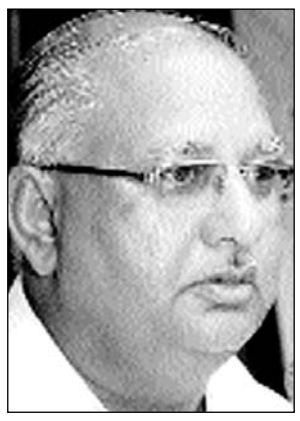

राजेन्द्र जोशी

विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की कमी, भर्ती प्रक्रिया में अनिश्चितता, प्रशासनिक जड़ता और परीक्षाओं की विश्वसनीयता में आती कमी जैसे विषय अब केवल विश्वविद्यालयों की आंतरिक समस्या नहीं रह गए हैं। इनका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के भविष्य और प्रदेश की उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ रहा है। राजस्थान में उच्च शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए सरकार को विश्वविद्यालयों की वर्तमान कार्यप्रणाली की व्यापक समीक्षा कर ठोस सुधारों की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

राजस्थान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में विश्वविद्यालयों की संख्या और विद्यार्थियों की संख्या तो बढ़ी है, लेकिन उसके अनुरूप शैक्षिणक संसाधनों और प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तार नहीं हो पाया है। प्रदेश के अनेक राजकीय विश्वविद्यालयों में स्वीकृत पदों के बावजूद पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। कहीं पद रिक्त हैं तो कहीं भर्ती प्रक्रिया लंबे समय से लंबित है। इसका सबसे बड़ा खामियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ता है। जिन विषयों में विशेषज्ञ शिक्षक होने चाहिए, वहां नियमित कक्षाएं प्रभावित होती हैं और विद्यार्थियों को स्वाध्याय या वैकल्पिक संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है।

उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है। विश्वविद्यालय ज्ञान, शोध, चिंतन और नवाचार के केंद्र होते हैं। यदि विश्वविद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक ही उपलब्ध नहीं होंगे तो उनसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शोध की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? इसलिए प्रदेश सरकार को सबसे पहले विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की कमी को गंभीरता से लेना होगा।

भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता और स्थायित्व

विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की भर्ती को लेकर समय-समय पर विवाद सामने आते रहे हैं। भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। यदि सरकार को लगता है कि विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाली भर्ती में भ्रष्टाचार या अनियमितता की आशंका रहती है, तो इसका समाधान भर्ती रोक देना नहीं हो सकता। इससे तो विद्यार्थियों और शिक्षा व्यवस्था को नुकसान होता है।

एक बेहतर विकल्प यह हो सकता है कि राजकीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की भर्ती के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) जैसी स्वतंत्र और संवैधानिक संस्था को अधिकृत किया जाए। विश्वविद्यालय अपनी वास्तविक आवश्यकता के अनुसार विषयवार और पदवार मांग सरकार को भेजें तथा निर्धारित प्रक्रिया के बाद आरपीएससी भर्ती प्रक्रिया पूरी करे। इससे चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी, विश्वविद्यालयों पर अनावश्यक दबाव कम होगा और लंबे समय तक पद रिक्त रहने की समस्या का समाधान किया जा सकेगा।

विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की भर्ती को राजनीतिक अथवा प्रशासनिक हस्तक्षेप से मुक्त रखते हुए इसे एक नियमित और समयबद्ध प्रक्रिया बनाया जाना चाहिए। जिस प्रकार अन्य सरकारी सेवाओं में भर्ती की निश्चित प्रक्रिया है, उसी प्रकार उच्च शिक्षा में भी शिक्षक भर्ती का स्थायी ढांचा विकसित किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालयों के बीच बेहतर समन्वय जरूरी

राजस्थान में विभिन्न विश्वविद्यालय अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि उनके बीच किसी प्रकार का प्रशासनिक और शैक्षणिक समन्वय ही न हो। प्रदेश में उच्च शिक्षा के लिए एक प्रभावी राज्य स्तरीय तंत्र की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

इस दिशा में विश्वविद्यालय आयुक्तालय की स्थापना पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। यह आयुक्तालय विश्वविद्यालयों के बीच समन्वय, मानव संसाधन, शैक्षिणक गुणवत्ता, प्रशासनिक सुधार, परीक्षा व्यवस्था और अन्य साझा विषयों की निगरानी कर सकता है।

विशेष रूप से शिक्षकों और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के स्थानांतरण एवं पदस्थापन के लिए एक पारदर्शी व्यवस्था बनाई जा सकती है। कई बार ऐसा होता है कि किसी विश्वविद्यालय में किसी विषय के शिक्षक आवश्यकता से अधिक हैं, जबकि दूसरे विश्वविद्यालय में उसी विषय के शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। यदि राज्य स्तर पर समन्वित व्यवस्था हो तो आवश्यकता के अनुसार मानव संसाधन का बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

लंबे समय तक एक ही स्थान पर पदस्थापन भी बने समीक्षा का विषय -विश्वविद्यालयों में लंबे समय तक एक ही स्थान पर अधिकारियों, शिक्षकों और कर्मचारियों के बने रहने से प्रशासनिक जड़ता की स्थिति पैदा हो सकती है। लगातार एक ही व्यवस्था में रहने से जवाबदेही और कार्यप्रणाली की समीक्षा कमजोर पड़ने की संभावना रहती है। इसलिए आवश्यकतानुसार स्थानांतरण, पदस्थापन और कार्य-मूल्यांकन की पारदर्शी नीति होनी चाहिए।

हालांकि स्थानांतरण को दंडात्मक हथियार बनाने के बजाय इसे प्रशासनिक दक्षता और शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारने का माध्यम बनाया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता और शिक्षकों की अकादमिक स्वतंत्रता को सुरक्षित रखते हुए ऐसी व्यवस्था विकसित करनी होगी।

विश्वविद्यालयों के एकीकरण पर भी हो विचार

राजस्थान में विश्वविद्यालयों की संरचना और उनकी भूमिका की भी व्यापक समीक्षा की आवश्यकता है। जहां समान प्रकृति के पाठ्यक्रम, संसाधन और प्रशासनिक ढांचे के कारण दोहराव हो रहा है, वहां आवश्यकता के अनुसार विश्वविद्यालयों के एकीकरण या शैक्षिणक संसाधनों के साझा उपयोग पर विचार किया जा सकता है।

हर जिले या क्षेत्र में अलग-अलग संस्थागत ढांचा खड़ा करने की बजाय कुछ विश्वविद्यालयों को विशेष विषयों और शोध के केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। इससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होगा और गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि एकीकरण का निर्णय केवल प्रशासनिक सुविधा के आधार पर नहीं, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोध और क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

परीक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता सबसे महत्वपूर्ण

उच्च शिक्षा में परीक्षा व्यवस्था का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय की डिग्री तभी सम्मानित मानी जाएगी, जब उसकी परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली पर विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और समाज का विश्वास बना रहे। दुर्भाग्य से परीक्षा आयोजन, प्रश्नपत्र, मूल्यांकन, परिणाम और अन्य प्रक्रियाओं को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन को परीक्षा व्यवस्था की विशेष निगरानी करनी चाहिए। प्रश्नपत्र निर्माण से लेकर परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था, उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन, परिणाम तैयार करने और पुनर्मूल्यांकन तक प्रत्येक स्तर पर तकनीक और पारदर्शिता का इस्तेमाल होना चाहिए। परीक्षा परिणाम में अनावश्यक देरी भी विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करती है। प्रतियोगी परीक्षाओं, उच्च शिक्षा में प्रवेश और रोजगार के अवसरों के लिए समय पर परिणाम आवश्यक हैं।

विश्वविद्यालयों को राजनीति नहीं, अकादमिक उत्कृष्टता का केंद्र बनाना होगा

राज्य के विश्वविद्यालयों में समय-समय पर विद्यार्थी आंदोलन होते हैं। विद्यार्थी जब शिक्षकों की कमी, परीक्षा संबंधी समस्याओं, परिणाम में देरी अथवा अन्य शैक्षिणक मुद्दों को लेकर आंदोलन करते हैं तो यह संकेत है कि व्यवस्था में कहीं न कहीं संवाद और समाधान की कमी है। हर विद्यार्थी आंदोलन को केवल कानून-व्यवस्था की समस्या मानने की बजाय उसके मूल कारणों को समझना चाहिए।

सरकार को विश्वविद्यालयों में नियमित संवाद की व्यवस्था विकसित करनी चाहिए। विद्यार्थियों, शिक्षक संगठनों, कुलपतियों और शिक्षा विशेषज्ञों के साथ समय-समय पर संवाद कर समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

राजस्थान की उच्च शिक्षा को अब तात्कालिक और टुकड़ों में किए जाने वाले सुधारों से आगे बढ़कर दीर्घकालीन नीति की आवश्यकता है। शिक्षक भर्ती के लिए पारदर्शी एवं केंद्रीकृत व्यवस्था, विश्वविद्यालयों के बीच समन्वय के लिए विश्वविद्यालय आयुक्तालय, मानव संसाधन का बेहतर उपयोग, आवश्यकता के अनुसार संस्थागत पुनर्गठन तथा परीक्षा व्यवस्था में तकनीकी और प्रशासनिक सुधार-ये सभी कदम मिलकर उच्च शिक्षा को नई दिशा दे सकते हैं।

सरकार को यह समझना होगा कि विश्वविद्यालयों पर किया गया खर्च केवल बजट का हिस्सा नहीं है, बल्कि प्रदेश के भविष्य में निवेश है। यदि विश्वविद्यालयों में शिक्षक नहीं होंगे, कक्षाएं नियमित नहीं होंगी, शोध का वातावरण नहीं बनेगा और परीक्षा प्रणाली पर विश्वास कमजोर होगा तो उच्च शिक्षा की पूरी संरचना प्रभावित होगी। इसलिए समय आ गया है कि राजस्थान उच्च शिक्षा की मौजूदा व्यवस्था की व्यापक समीक्षा करे और 'अधिक विश्वविद्यालय' से आगे बढ़कर 'बेहतर विश्वविद्यालय' की दिशा में कदम उठाए। विश्वविद्यालयों को प्रशासनिक नियंत्रण के बोझ से मुक्त, जवाबदेह, पारदर्शी, गुणवत्तापूर्ण और विद्यार्थी-केंद्रित बनाना ही राजस्थान की उच्च शिक्षा के पुनर्निर्माण का आधार होना चाहिए।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 2 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, भरणी नक्षत्र रात्रि 1:43 तक, धुव्र योग रात्रि 9:12 तक, तैतिल करण प्रातः 6:13 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज ज्वालामुखी योग प्रातः 6:13